# बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

अंक-12, वर्ष - 2 | दिसम्बर-2016 | मूल्य 10/-




प्यारे दोस्तो,

ठंड का मौसम आ गया है। स्वेटर, टोपी और रजाई से हमने दोस्ती कर ली है। सड़कों पर चारों तरफ धुआँ-धुआँ-सा जब कोहरा छाया होता तो ऐसा लगता है, जैसे हम किसी और दुनिया में प्रवेश कर गए। स्कूलों में छुट्टी, मम्मी-पापा और भईया-दीदी संग घर पर समय बिताना, बिस्तर के अंदर रहना। कभी सूखे पत्ते, लकड़ियाँ जलाकर आग तापना और फिर उस आग में आलू पकाना। लिट्टी-चोखा, चाय-बिस्कुट और गरमा-गरम पकौडों का तो जवाब ही नहीं। ठंड में सूरज कितना प्यारा होता है, ना? वह अपनी किरणों से हमें गरमाहट महसूस कराता है। तो दोस्तो कैसा होता है यह ठंड का मौसम? कुछ ही दिनों में यह वर्ष भी समाप्त होने वाला है, तो पता है दोस्तो इस साल का मजेदार यादगार पल क्या है? जिसका सभी जगह तहलका मचा हुआ है। बैंकों में लम्बी-लम्बी लाइनें लगी हैं। हाँ ! सही सोचा आपने-पुराने 500 और 1000 रुपये के नोटों का बंद होना और नये नोटों का आना। रुपया रहते हुए भूखा, ये कैसी मुसीबत है। है न सोचने वाली बात? पर जो भी है, अच्छा है। सोचकर देखो। इधर क्रिसमस भी आ गया। पता नहीं इस बार सांता क्लॉज की झोली से हमारे लिए क्या निकलने वाला है।

पर दोस्तो! क्या कभी सोचा है आपने, इतनी ठंड में पशु-पक्षी और सड़कों पर जो लोग रहते हैं, जिनके पास कुछ नहीं है, वे कैसे रहते होंगे? तो चलें इस वर्ष को समाप्त होने से पहले हम एक और अच्छा काम करें -इन्हें मदद करके।

किलकारी लाल



## प्रेरक प्रसंग

गुरु नानक को बचपन में जब पाठशाला में दाखिल किया गया, तो एक दिन उनके पण्डितजी ने पाया कि अन्य बच्चे तो अपना पाठ पढ़ रहे हैं, किन्तु बालक नानक चुपचाप बैठे हुए हैं। उन्होंने डाँटते हुए इसका कारण पूछा। बालक नानक ने उत्तर दिया, ''मैं तो वह पाठ याद कर रहा हूँ, जिसके बाद कोई दूसरा पाठ याद करने को न रहे।'' ''क्या मतलब?'' पण्डितजी ने पूछा। ''मतलब यह कि तोते के समान रटने से प्रभु का सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं होता।'' ''मगर तुम तो एक अक्षर भी पढ़ते नहीं? ''इस अक्षर को (अर्थात् परमात्मा को) पढ़ता ही कौन है? यदि एक अक्षर का ज्ञान सबको हो जाय, तो निश्चय ही जन्म और मृत्यु में कोई अंतर न रहेगा, और मैं इस एक अक्षर को ही पढ़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ।''

''मगर संसार में दूसरी बातें भी तो हैं पढ़ने की? भला लिखकर बताओ तो, तुम्हें क्या-क्या आता है?'' बालक नानक आँखें मूँदकर बुदबुदाते हुए बोले, ''हे मनरूपी लेखक! मोह-ममता को फूँककर त्यागारूपी स्याही से बुद्धिरूपी कागज पर प्रेम रूपी कलम से सत्-असत् का विचार लिख। उस प्रभु का नाम लिख, जो आधार है सब प्राणियों का और संसार का। यदि ऐसा लिखना आ गया तो, जहाँ भी लेखा (हिसाब) माँगा गया, वहीं वह सही सिद्ध होगा।'' और पण्डितजी तुरन्त उनके पिता कल्याणय के पास गये और उन्होंने साफ-साफ कह दिया, ''यह लड़का पढ़ने नहीं, पढ़ाने आता है।''

प्रस्तुति-सुमन

## अदलम-बदलम

मेंढ़क ने चीं-चीं किया तो,  
चिड़ियाँ कुछ बोली टर्र से,  
बैठी कीट-पतंगे खाने,  
मेंढ़क उड़ गया फर्र से।

बकरी के ढेंचू-ढेंचू,  
जरा बताओ क्या है राज़,  
गधे मियाँ की चपर-चपर से,  
में-में की आती आवाज।

हिस-हिस करता बंदर,  
अदरक का है चखा स्वाद,  
खें-खें करते अजगर जी,  
खा रहे थे फ्रुट सलाद।

अदलम-बदलम है जंगल में,  
नीचे लेकर ऊपर से,  
जैसे चूहा बोला म्याऊँ,  
बिल्ली मौसी भागी घर से।

गुर्राते कुत्ते गर्रर-गर्रर,  
सुनकर उनकी दहाड़,  
जंगल का राजा भौंका,  
पहाड़ी के उस पार।

अभिनंदन गोपाल

## घूमा डाला

सोचकर बताओ कि वह कौन-सी संख्या है, जिसे अगर पलटकर लिख दिया जाए तो वह पहली संख्या की दुगनी हो जाएगी?

## कहानी

# राधिका



''भईया दो रुपये दो न! दिन भर से कुछ खाया नहीं है, जोर की भूख लगी है। दो न आंटी, पैसे दो न।'' वह यह कहती हुई स्टेशन पर बैठे सारे यात्रियों से पैसे माँग रही थी । कुछ लोग उसकी हालत पर तरस खाकर एकाध सिक्का दे रहे थे तो कुछ लोग दुत्कारते हुए उसे आगे बढ़ने को कह देते। और वह बड़ी ही शालीनता से आगे बढ़ जाती। उसकी झुकी आँखों में मुझे समुंदर नजर आ रहा था। उसके घुँघराले व बिखरे बाल उसके अभावों को दिखा रहे थे। तन पर मैले-कुचैले शर्ट-स्कर्ट उसके विद्यार्थी होने का प्रमाण दे रहे थे। तथा उनमें गरीबी रूपी कई छेद बाहर दीख रहे थे।अचानक कानों में एक कर्कश आवाज आयी,'' छोड़ो जी! कितनों को दोगे एक-एक रुपया! इन लोगों का यह पेशा है। दिन-भर माँगते-फिरते हैं। जान-बूझ कर फटे कपड़े पहन लेते हैं, ताकि हम-आप को इनपर दया आ सके।'' अपने पति को मना करते हुए वह महिला, ''ऐ लड़की चल बढ़, आगे यहाँ से।'' कहती हुई, इधर-उधर देखने लगी। महिला की बात से उसके गोरे- से मुखरे पर काले-काले बादल घिर आए और आँखें डबडबा गयीं। फिर भी वह माँगते हुए आगे बढ़ती गयी। थोड़ी देर में वह हमारे पास आयी। पास आकर उसने अपने कोमल और गंदे हाथ को माँ के आगे फैला दिया। माँ ने उसे देने को पर्स खोला पर पर्स में एक भी सिक्का या खुदरा पैसा नहीं था। माँ पुनः पर्स देखने लगी। तभी वह फिर से बोली, ''आंटी, सुबह से भूखी हूँ, जल्दी दो न।'' यह सुन माँ ने तुरंत ही एक सौ का नोट भईया को यह कहते हुए दिया कि इसके लिए खाने को समोसे लेते आओ। और उसे बैठने का इशारा करते हुए पूछा, '' तुम्हारा नाम क्या है?'' ''राधिका'' उसने कहा।'' तुम रहती कहाँ हो?'' माँ ने जिज्ञासा वश पूछा। '' यहीं स्टेशन से एक किमी॰ की दूरी पर। झोंपड़ियों की एक बस्ती है। उन्हीं में से एक झोंपड़ी में मैं अपने भाई-बहनों और मम्मी-पापा के साथ रहती हूँ। उसकी भाषा की शुद्धता और बिना संकोच के दिए इस उत्तर से माँ आश्चर्यचकित हो गयी। माँ ने तपाक से पूछा,''तुम स्कूल भी जाती हो क्या?'' हाँ! जाती हूँ। मैं आठवीं में पढ़ती हूँ। फिर यह काम.. । कौन करवाता है तुमसे यह ? '' अब उसका चेहरा उदास हो गया था। '' पिताजी मजदूर हैं। वे जो भी कमाते, वह सब शराब में उड़ा देते, हम पाँच भाई-बहनों की दाल-रोटी के लिए माँ घरों में काम करती। हाल ही में हमारा एक और भाई हुआ है। इसलिए माँ काम नहीं कर पाती। रोज शराब पीने वाले पिताजी की भी तबीयत शराब के बंद हो जाने से ठीक नहीं रहती। अब आप ही बताइए- इस स्थिति में अगर मैं भीख न माँगूँ तो क्या करूँ? अपने छोटे-छोटे भाई-बहनों को कैसे रोते देखूँ? बोलिए आंटी?'' और यह कहते हुए उसकी आँखें बरसने लगीं। महज 10-12 वर्ष की होगी वह और इस उम्र में इतनी समझदारी! न जाने कहाँ से आयी थी उसके पास! जब खुद के उसके दूध के दाँत नहीं टूटे थे। वह आपनी भाई-बहनों के लिए दूध जुटा रही थी। सच में गरीबी से बढ़कर कोई स्कूल नहीं होता। उसके द्वारा इन बातों को सुन माँ की आँखें भी भर आयी थीं। उसकी माता बढ़ते हुए अपने हाथ को उसके सर पर रखते हुए सहलाने लगी। तभी हमारे सामने एक लंबा और पतला शरीर वाला, साँवले रंग का एक व्यक्ति खड़ा हो गया। उसकी आँखें सूजी थीं। ''अरे पापा आप यहाँ कैसी तबीयत हैं अब आपकी? और आप कहाँ जो रहे हैं?'' राधिका ने पूछा। उस आदमी की आँखों में पछतावे के आँसू थे। ''बेटा, मुझे माफ कर दो। मेरी वजह से तुम्हे ये सब करना पड़ा। अब तुम रोज स्कूल जाओगी। अब यह काम तुम नहीं करोगी।'' यह कहते हुए उसकी आँखों से भी आँसू बहने लगे। उधर से ही मजदूरों का समूह जा रहा था। राधिका के पिता भी राधिका को घर जाने आदेश देते हुए समूह में मिल गए। तभी भईया भी समोसे लेकर आ गए। उतने में हमारी ट्रेन भी आकर पटरी पर खड़ी हो गयी। हम राधिका को समोसे देकर उसके अच्छे भविष्य की कामना करते हुए उससे विदा लेकर अपनी मंजिल पर निकल पड़े।

रानी

---

आओ खेलें खेल

## नमस्कार, स्वागत, अभिनन्दन!

आओ खेलें खेल। खेल का नाम है नमस्कार, स्वागत, अभिनंदन! इस खेल में जितने चाहें, उतने बच्चे खेल खेल सकते हैं। इस खेल को खेलने से पहले सभी बच्चे गोलाकार में बैठेंगे।

गोलाकार में बैठे बच्चे प्रतिदिन अभिवादन में उपयोग होने वाले शब्दों को बोलेंगे, जैसे- हाय (मौखिक), हैलो (हाथ मिलाना), हैलो (मौखिक), नमस्ते (हाथ जोड़कर), सेल्यूट (सीधा हाथ माथे पर), गुड मॉर्निंग, गुड आफ्टरनून, गुडईवनिंग, गुड नाइट, हैपी बर्थ डे आदि।

प्रत्येक बच्चे को अपनी बारी आने पर एक अभिवादन वाले शब्द बोलना है। नियम यह है कि गोलाकार में बैठे बच्चे किसी भी अभिवादन या अभिनंदन को दोहरा नहीं सकते हैं। खेल खेलाने वाले को यह ध्यान देना होता है कि यह खेल बहुत तेजी से खेला जाना है। यदि कोई भी खिलाड़ी देर करता है या रुक जाता है तो वह बच्चा खेल से बाहर हो जाता है। जो बच्चा आखिर तक खेल में बना रहता है, विजेता होता है।

## धरती के गहने

गेहूँ की बाली,
फूलों की डाली,
आम की लाली,
हवा मतवाली।

नदियों की कल-कल,
झरनों की झन-झन,
सागर की लहरें,
पानी की धारा।

अम्बर है प्यारा,
धरती हमारी,
पौधे की हरियाली,
झुकी है डाली।

नदी, पर्वत, झरने,
धरती के गहने,
प्यार-मुहब्बत
इनके क्या हैं कहने!

विष्णु कुमार, वर्ग-IX

## छूट रहल बा पसीना

खुले लागल खाता,
चले लागल जाँता।
घरवे में खुद्दी पीस के,
बने लागल आँटा।

मंदा-मंदी बजार बा,
सब्जी के जगह अचार बा।
पईसा के कमी से भइया,
होझराइल गरीब परिवार बा।

भूखल-पियासल लगल बा लाइन में,
इ कइसन बा दुःख के महीना।
कालाधन रखे वालन के,
छूट रहल बा खूबे पसीना।

फइलल बा अफरा-तफरी,
केहू के ना चैन बा।
चाईना का अमेरिको आज,
सरकार जी के फैन बा।

अतुल रॉय, वर्ग- दशम्

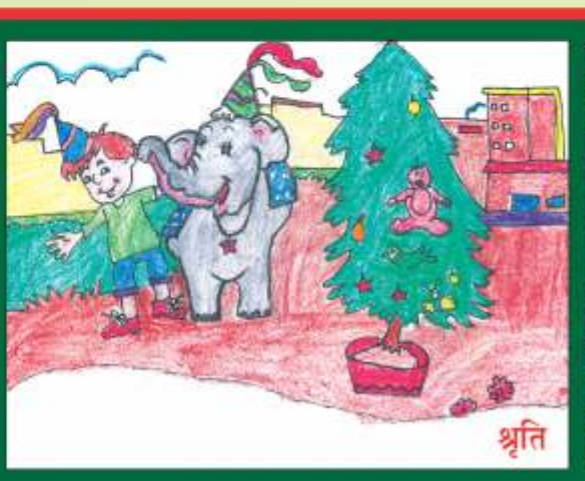

## बबलू और रिमझिम

रात भर रिमझिम कुतिया के पिल्लें कें-कें -कें कर रहे थे। सुबह धूप निकलते ही रिमझिम अपने सारे पिल्लों को धूप में लायी। ठंड से सारे पिल्ले थर्रथर्रा रहे थे। रिमझिम अपने पिल्लों को चाटती और उनके संग खेलती। कभी मुँह में लेती कभी उछल- कूद करती और कभी दौड़ाती। सभी आपस में मस्ती कर रहे थे। एक पिल्ले ने अपनी माँ से कहा, ''माँ, माँ! भूख लगी है।'' उसकी माँ इधर-उधर देखने लगी। फिर अपने सभी पिल्लों को लेकर आगे बढ़ती है। इधर-उधर पूँछ हिलाते, सूँघती रिमझिम चल रही थी, दूसरे पिल्ले ने कहा, ''माँ इधर-तो कुछ खाने को दिख नहीं रहा।'' उसकी माँ ने चलते-चलते जवाब दिया, '' तू ढूँढ़ तो सही, जरूर कुछ मिलेगा।'' माँ और बच्चे दोनों भोजन की तलाश कर रहे थे। तभी उनके आगे किसी ने रोटी फेंकी। सारे पिल्ले चिल्लाते हुए दौड़े, ''माँ, माँ! रोटी '' उसकी माँ ने उस लड़के की तरफ देखा। वह वही लड़का था, जिसे सब बबलू कह पुकारते थे।बबलू खड़ा मुस्कुरा रहा था। दिन यूँ ही बीत गया और रात हो चुकी थी। रिमझिम अपने पिल्लों के साथ एक गाड़ी के नीचे रात बिता रही थी। पिल्ले ठंड से कें-कें कें कर रहे थे। उसकी माँ सभी पिल्लों को सीने से चिपकाए थी। तभी किसी ने उसे एक दुशाला उढ़ाया। पिल्ले की माँ ने देखा तो यह वही बबलू था। ठंड से थोड़ी राहत मिली सारे पिल्ले उस गरमाहट में समाए रहे और फिर से रिमझिम कुतिया खुशी के साथ, अपने बच्चों को प्यार से पुचकारने लगी। साथ ही रिमझिम बबलू को मन- ही- मन धन्यवाद दे रही थी, जिसने उन्हें रात गुजारने का एक सहारा दे दिया था।

प्रवीण वर्ग-VI

## देश के वीर जवान

सारे जग से प्यारा,
अपना देश हमारा।
यहाँ हैं वीर जवान,
मेहनत के तूफान।
आतंक को वे दूर भगाते,
मेहनत से वे न कतराते।
भारत की रक्षा की खातिर,
कई वीर हैं जान गँवाते।
लोगों के मन विश्वास जगाया,
निडरता को हम सबने अपनाया।
शहीद भाइयों को हमारा सलाम,
पूरा करेंगे हम उनका काम।
आज खाएँगे हम एक और कसम,
बॉर्डर पर जाकर कदम-कदम।
करेंगे अपने देश की सेवा हरदम।
दुश्मन को मार भगाएँगे,
जीत का जश्न मनाएँगे।
शहीदों को हम याद करेंगे।
देश को हम आबाद करेंगे।
हम हैं देश के वीर जवान,
हम हैं देश के वीर जवान।

प्रियांशु कुमार

## हँसो-हँसाओ

- बबलू - मुझे कोई बात एक मिनट के लिए भी याद नहीं रहती है।
  बबली - ऐसा कब से?
  बबलू - क्या बताऊँ, कब से है?

- बबलू - (मम्मी से) मम्मी क्या पापा जी की नज़र कमजोर है?''
  मम्मी - नहीं बेटा !
  बबलू - तो फिर वह मुझे उल्लू और गधा क्यों कहते हैं?

- बबली - बबलू तू इतना मोटा कैसे हो गया?
  बबलू - हमारे घर में फ्रिज नहीं है।
  बबली - तो???
  बबलू - कुछ भी बचा नहीं सकते, सब खाना ही पड़ता है।

- मालिक- (बबलू से) तू बहुत बड़ा गधा है।
  बबलू - नहीं मालिक, बड़े तो आप हैं, मैं तो छोटा हूँ।

- बबलू - बबली, चींटियों से कोई एक फायदा बताओ।
  बबली - चीटियाँ यह बता देती हैं कि मम्मी ने मिठाई कहाँ रखी हैं?

- बबलू - कल रद्दी की टोकरी में दस-दस के दो नोट मिले थे।
  बबली - मैंने ही उन्हें फेंका था, वे असली नहीं हैं।
  बबलू - इसीलिए तो वापस कर रहा हूँ।

## कुछ नया करें

आओ कुछ नया करते हैं। इसके लिए चाय पीने वाला कागज या प्लास्टिक के कप या गिलास और कैंची जुगाड़ कर लें। अब चित्रानुसार थोड़ी दूरी पर कप या गिलास को काटें। ध्यान देना है-कप या गिलास पुराना हो। आप देख रहे हैं न छोटे -बड़े गिलास या कप से सजावट करने का सामान कैसे बनता है? तो अब आप भी इनसे सजावट के सामान खूब बनाइए और खूब सजाइए।साथ ही सोचिएगा भी कि यह काम कब-कब और किन अवसरों पर करना है।

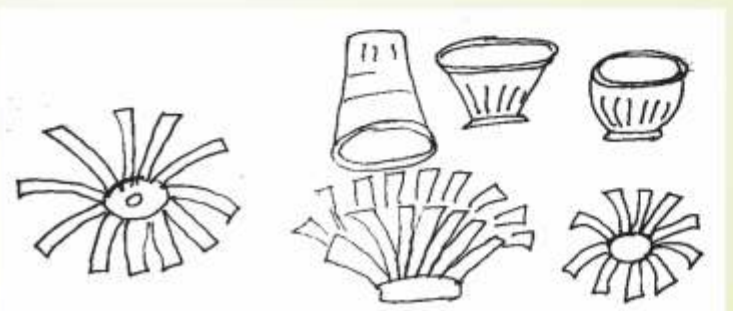

## फूल

फूल-फूल-फूल,
दिल को भाए फूल।
महक इसकी सबसे अच्छी,
कितना प्यारा है यह फूल।
हँसना और मुस्काना,
सिखाता है यह फूल।
मन को लुभाने वाला,
होता है यह फूल।
खिलूँ मैं भी ऐसे,
जैसे खिलता फूल।

स्वप्निल कुमारी

**इस अंक के जबाब**
**घूमा डाला-3**

**बूझो तो जानें**
**फूट, मूली, मधुमक्खी का छत्ता, नमक**

इस अंक के रचनाकार - शुभम् श्री, युवराज, राजेश्वरी, हर्ष, विद्या, रौशन, प्रियांशु, गौरव, अतुल, सृजन, मुनटुन, प्रवीण, सम्राट, राहुल, अभिनंदन, प्रियंतरा
बाल सम्पादक -
संयोजक - सुधीर कुमार
कार्यकारी सम्पादक - राजीव रंजन श्रीवास्तव
सम्पादक - ज्योति परिहार, निदेशक बिहार बाल भवन किलकारी, पटना
कार्यालय पता - बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015]



# झरोखा

मद्य निषेध विषय पर आधरित पेंटिंग प्रदर्शनी

किलकारी में क्रिसमस-डे

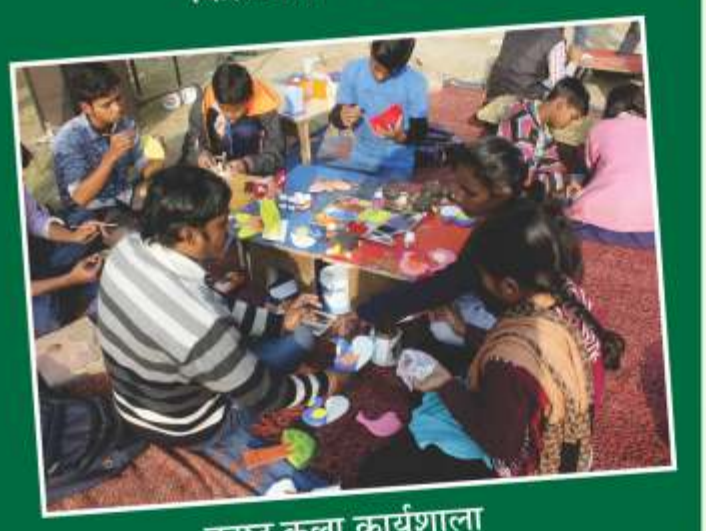

काष्ठ कला कार्यशाला

हस्तलिखित अखबार निर्माण करते म०वि० पहाड़ी बाल केन्द्र, पटना के बच्चे

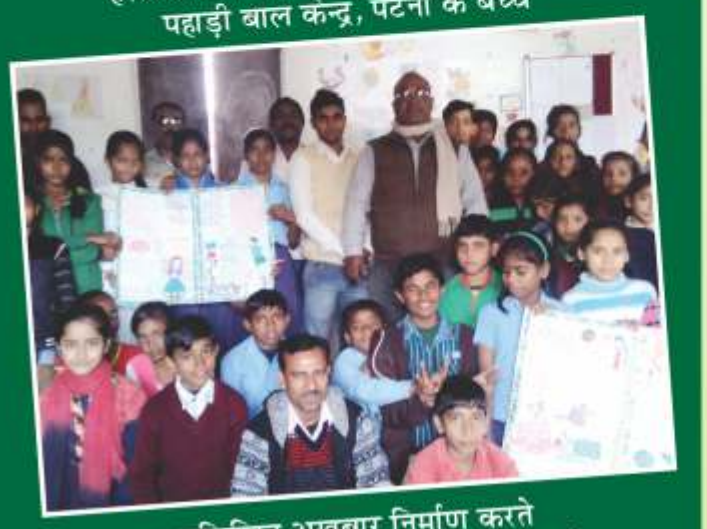

हस्तलिखित अखबार निर्माण करते म०वि० बीरा, दरभंगा बाल केन्द्र, के बच्चे

## गो-गो और जो-जो

हमेशा की तरह आज भी गो-गो बंदर हर पेड़ पर उछल रहा था। कभी इस पेड़ की टहनी पर तो कभी, उस पेड़ की। लेकिन आज उसके साथ उसका छोटा भाई, जो-जो बंदर भी था, इसलिए वह उसके साथ थोड़ी सावधानी बरतता, क्योंकि मम्मी ने खास गो-गो को जो-जो का ध्यान रखने को कहा था। गो-गो, जो-जो को पूरा जंगल घूमाने के लिए ले जा रहा था। उसने उसे सबसे पहले, लम्बू जिराफ से मिलाया। जो- जो, लम्बू जिराफ को देख दंग रह गया, उसने कहा, ''भैया-भैया ये इतना लम्बा कौन है? गो-गो ने हँसते हुए कहा, अरे! जो-जो, ये मेरा सबसे अच्छा, दोस्त लम्बू जिराफ है। मैं जब तुम्हारे इतना बड़ा था, तब मैं इसी के संग घूमा करता था। ''जो-जो को भी लम्बू जिराफ बहुत पसंद आया। आगे, गो-गो ने उसे सुरीली कोयल से मिलाय। जो-जो ने पूछा,'' भैया-भैया ये कौन है? ये तो हमसे भी छोटी है।'' गो-गो मुस्कुराते हुए, जो-जो से कहता है, '' अरे! जो-जो ये सुरीली कोयल है। इसकी आवाज बहुत मीठी है जैसे इसकी आवाज में मिसरी घुली हुई हो। ''जो-जो सुरीली कोयल की आवाज सुनकर बहुत खुश हो गया और उसी की तरह उसने भी, गाने की कोशिश की। लेकिन था तो वह बंदर ही, कोयल की आवाज कैसे निकालता। आगे गो-गो ने उसे, मोटू हाथी से मिलाया।, जो-जो उसे देख, एकदम हँसने लगा, मानो उसने कोई जोकर देख लिया हो, गो-गो ने उसे चुप कराया और हाथी से माफी माँगने को कहा, लेकिन हाथी ने कहा,''अरे! रहने दो गो-गो, हँसने दो। इसे, जब तुम भी मेरे पास पहली बार आए थे तब तुम भी इसी की तरह हँसे थे, वैसे ये है कौन? '' गो-गो, मोटू हाथी को समझाता हुआ कहता है, ''ये मेरा छोटा भाई, जो-जो। है इसे मैं जंगल घुमाने के लिए लाया हूँ।'' हाथी चिघारता हुआ कहता है, '' चलो! ठीक है मैं चलता हूँ, मुझे जरा काम है। गो-गो और जो-जो भी वहाँ से चले जाते हैं, आगे उन्हें भूरा भालू मिलता है। जो-जो उसे देख थोड़ा डर जाता है। लेकिन थोड़ी देर बाद वह गो-गो की तरह ही उसके साथ खेलने-बोलने लगे। भूरा भालू ने उसे शहद खिलाया। शहद खाकर जो-जो कहता है, ''भईया-भईया, चलो न हम भी शहद निकालेंगे, मधुमक्खियों के छत्तों से। गो-गो कहता है, अरे! नहीं-नहीं अगर हमें वहाँ गए, तो वे मधुमक्खियाँ हमे काटकर आलू बना देंगे। जो-जो थोड़ा सोचते हुए कहता है, तो भईया यह भूरा भालू शहद कैसे निकालता है? क्या इसे मधुमक्खियाँ नहीं काटतीं? या फिर ये उनकी दोस्त है।अगर हाँ तो मैं भी उसे अपना दोस्त बनाऊँगा और ढेरों शहद खाऊँगा। ''गो-गो हँसते हुए कहता है अरे जो-जो वे मधुमक्खियाँ इसकी दोस्त नहीं हैं ये तो इसके बाल है जो इसे मधुमक्खियों के काटने से बचाते हैं, आगे शंहशाह शेरू की गुफा था, इसीलिए गो-गो वहाँ से पीछे जाना चाहता था, तभी जो-जो पूछता है, ''भइया उस गुफा में कौन रहता है? गो-गो कुछ कहने ही वाला था कि गुफा से शहंशाह शेरू निकलता है। शेर का चेहरा उसके पंजे, और उसके बाल देख जो-जो बहुत डर जाता है। तभी शेर दहाड़ता है, और उसकी दहाड़ सुन जो-जो पेड़ से गिर जाता है और शेर उसे दबोच लेता है। अपने भाई को शेर के पंजे तले दबा देख गो-गो रोता हुआ कहता है, ''हे शहंशाह शेरू, इसे छोड़ दीजिए। यह मेरा छोटा भाई जो-जो है। यह आपको नहीं जानता है।''

शहंशाह शेरू गो-गो से कहता है''अरे! जानने न जानने से क्या होगा? मुझे तो इसे खाना है। तभी जो-जो कुछ सोचता है और शहंशाह शेरू से कहता है, हे शहंशाह शेरू आप मुझे मत खाइए मैं आपको इससे भी लजीज चीज खिलाऊँगा वो भी मीठा-मीठा। शेर सोच में पड़ जाता है कि मैंने आज तक कोई मीठा माँस नहीं खाया है। आज ज़रा चख कर देखा जाए कैसा लगता है? वह अटकते हुए कहता है, ''चलो- चलो, लेकिन मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। शहंशाह शेरू जो-जो और गो-गो के साथ मीठा मांस खाने को चला जाता है। जो-जो उसे मधुमक्खी के छत्ते के पास ले जाता है और कहता है।, ''मालिक, ये देखिए ये मीठा मांस ऊपर टंगाँ है , आप जाइए और पत्थर फेंक कर उसे नीचे उतारिए और मजे से खाइये। वह मधु मक्खी के छत्ता बहुत ऊँचा था? इसीलिए शेर को लगा कि वह मांस ही है। जैसे ही शेर पत्थर उठता है जो-जो और गो-गो वहाँ से भाग जाते हैं। शेर पत्थर उठाता है और बड़ी तेजी से फेंकता है। वह पत्थर सीधा छत्ते नीचे जमीन पर गिर जाता है। जैसे ही शेर उसे सूँघने के लिए सर नीचे करता है, सारी मधुमक्खियाँ उसे काटने लगती हैं। और वहाँ जो-जो और गो-गो बडे खुशी से शहंशाह शेरू के चेहरे के बारे में सोच रहे थे, जो कि अब तक आलू हो चुका था।

रौशन पाठक

## बूझो तो जानें

खेत में उपजे सब कोई खाय,
घर में होवे घर खा जाय।

एक खेत में ऐसा हुआ
आधा बगुला आधा सुआ।

एक कुएँ में घाट हजार
एक हजार घुसे पनिहार।

फले न फूले, झुके न डार
उसको खाओ बारहो मास।

## अंतर ढूंढ़ो

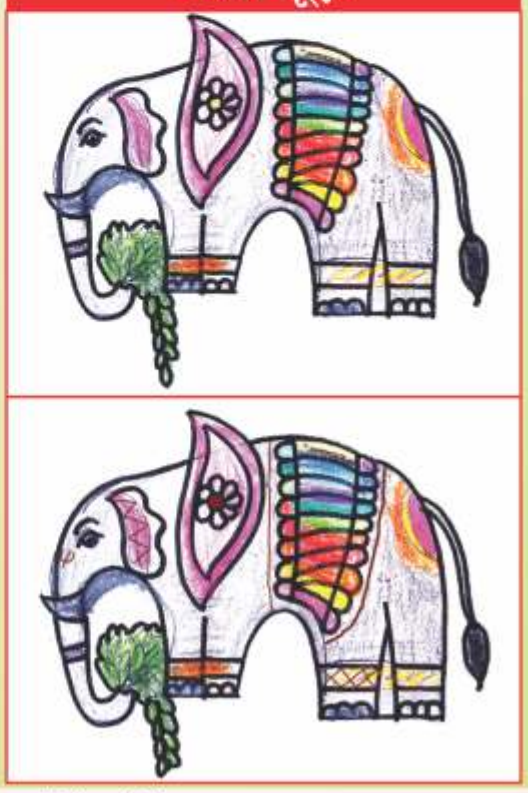

दूरभाष : 0612-6457227, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar